

दोहन की अति: संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में चेतावनी दो साल बाद भारत में भूजल के गंभीर संकट का खतरा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

patrika.com

नई दिल्ली. संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि अगले दो साल में भारत में भूजल के स्तर में बेहद कमी हो सकती है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत में सिंधु-गंगा के मैदान के कुछ इलाके पहले ही भूजल की कमी के खतरनाक स्तर को पार कर चुके हैं। उत्तर-पश्चिमी भारत में 2025 तक भूजल के गंभीर संकट का खतरा है। 'इंटरकनेक्टेड डिजास्टर रिस्क रिपोर्ट 2023' शीर्षक से संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय-पर्यावरण और मानव सुरक्षा संस्थान (यूएनयू-ईएचएस) ने यह रिपोर्ट प्रकाशित की है।

रिपोर्ट में कहा कि भारत दुनिया में भूजल का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है। वह अमरीका व चीन के संयुक्त उपयोग से अधिक भूजल का इस्तेमाल करता है। भारत का उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र देश की बढ़ती आबादी के लिए 'रोटी की टोकरी' के रूप में काम करता है। देश में चावल उत्पादन का 50% और

भंडार पर दुनियाभर में मंडराया खतरा

रिपोर्ट में चेतावनी दी गई कि दुनिया में भूमिगत जल स्रोत खत्म होने की कगार पर पहुंच रहे हैं। दुनिया के आधे से ज्यादा प्रमुख भूमिगत जल स्रोत प्राकृतिक रूप से फिर भरने के बजाय तेजी से कम हो रहे हैं। कुओं में जिस भूमिगत जलस्तर से पानी आता है, अगर पानी उससे नीचे चला गया तो किसान पानी तक पहुंच खो सकते हैं। इससे खाद्य उत्पादन पर खतरे की आशंका है।

गेहूं उत्पादन 85% पंजाब, हरियाणा में होता है। पंजाब में 78% कुओं का भूजल के लिए बहुत ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। सऊदी अरब जैसे देश पहले से भूजल की कमी से जूझ रहे हैं। भारत समेत अन्य देश इस संकट से दूर नहीं हैं। पानी की कमी होने पर कृषि के लिए करीब 70% भूजल की निकासी की जाती है। कृषि को सूखे से होने वाले नुकसान को कम करने में भूमिगत जल भूमिका निभाता है।